मीराबाई के काव्य में मुग्धा भाव की मार्मिकता

डॉ संजीव कुमार*

पुत्र श्री नफे सिंह
गांव बडसीकरी खुर्द,तहसील कलायत,
जिला कैथल (हरियाणा)

***Email ID**: smdhull91@gmail.com*

Accepted: 07.01.2023 **Published**: 01.02.2023

मुख्य शब्दः मति का धीर, कौतूहल, अप्रत्याशित, परिपोषक, उपासिकाएं।

शोध आलेख सार

मध्यकालीन समाज में अवर्णों को सवर्णों के समान होने के लिए जाति प्रथा से टकराना पड़ता था। भक्ति आंदोलन में आर्थिक समानता की बात नहीं थी, बात केवल भक्ति की दृष्टि से समानता की थी लेकिन इस भाव जगत की समानता के अनुकूल करने पर जाति प्रथा राह रोककर खड़ी हो जाती थी। कबीर जैसे समाज–सुधारक भी समाज की इस व्यवस्था को नहीं बदल सके और लिखते हैं– ''जाति जुलाहा मति का धीर।''

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, संजीव कुमार, All Rights Reserved.

परिचय

अधिकांश काव्य मीरां की भक्ति पद्धति के मर्मों को समझाने वाली है। किसी दिन बचपन में बारात को देखकर बालिका मीरां के वर कौन हैं ? 1 प्रश्न के उत्तर में माताजी ने कौतूहल को शान्त करने के उद्देश्य से कृष्ण की मूर्ति की ओर संकेत करते हुए कहा कि ''यह वर है'' । 2 उस दिन से लेकर मीरां के मन के उस मूर्ति में मुग्ध होने को कथा प्रसिद्ध है। इसमें कोई अचानक एवं अप्रत्याशित मुग्धता को हमें नहीं देख पाते। हमें इस पर संदेह नहीं है कि आराध्य को ''पति'' रूप में देखने और आध्यात्मिक रति में मुग्ध हो जाने की प्रवृत्ति के परिपोषक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक पारम्परा पैतृक

वरदान के रूप में मीरां को प्राप्त हुई थी। यह भी स्पष्ट है कि आध्यात्मिक रति का प्रचार एवं विकास का वातावरण तत्त्कालीन उत्त्र भारत में मौजूद था।

मीरां और जीव गोस्वामी के वृन्दावन में मिलन की कथा भी उनके आचरण एवं कृष्ण की अनन्यता पर उनके विश्वास की परिचायक हैं। मीरां तीर्थस्थानों का महत्व मानने वाली मथा आराध्यों की उपासना के लिए उन स्थानों की यात्रा करने वाली थी। उतना ही नहीं काशी तथा वृन्दावन जाने से यह वे शैव–वैष्णव भेद को ज्यादा महत्व न देने वाली तथा एकता का प्रचार करने वाली थी। जीव गोस्वामी के दर्शन न देने के न्याय को सुनकर मीरां ने जो उत्त्र दिया वहीं इस कथा का मर्म है। मीरां ने कहा ''वृन्दावन में एकमात्र पुरूष श्रीकृष्ण हैं और वे मेरे प्रियतम है, अन्य सभी तो स्त्रियां हैं।'' मीरां के मत में जीव गोस्वामी को अपने को पुरूष समझने का अधिकार नहीं है। कथा के अनुसार गोस्वामी की प्रांति दूर हो गई और स्त्रियों को न देखने की प्रतिज्ञा छोड़कर करके दर्शन दिये गये। एकमात्र आराध्य को पति मानने और अन्य सबको उपासिकायें घोषित करने वाली भक्ति पद्धति का यथा योग्य अनुमोदन मीरां से होता था।

हरिऔधजी लोकसंरक्षण एवं विश्व कल्याण से परिपूर्ण मनुष्य के रूप में कृष्ण का चित्रण करना पंसद करते थे। अतः कृष्ण की मानवता का उद्घाटन करते हुए प्रेम सम्बन्ध की गहराई का निरूपण करने की सुविधा मिली है। इन विषय में भी मीरा की वैयक्तिक विरहानुभूति और मुग्धता का प्रभाव दिखाई देता है। इससे यह स्पष्ट है कि हरिऔधजी के ह्दय से मीरा के भक्ति निरूपणजन्य संस्कार हटा नहीं जा सकता था।

हरि रस पीया जांनिये, जे कबहूं न जाइ रवुमार।
मतवाला दीदार का मांगे मुक्ति बलाई।
मीरा मगन भई हरि के गुण गाय।
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय।
न्हाय धोय जब देखन लागी, सालिग राम गई पाय।3
तनक हरि चितवां म्हारी ओर।
हम चितवा थे चितवोणा हरि, हिवडो बड़ी कठोर।
म्हारी आसा चितवनि थारी, और णा दूजा दोर।
ऊभयाँ ठाढ़ी अरज करूं छूं, करतां करतां भोर।
मीरा रे प्रभु हरि अविनासी, देस्यूं प्राण अकोर। 4

घमंड, पर पीडा, नास्तिकता, छल–कपट और नाना प्रकार के अत्याचार मीरां पूर्व युग के व्यक्तिगत जीवन में दिखाई देते थे। व्यक्तिगत जीवन का अंधःपतन पारिवारिक जीवन की शिथिलता और सामाजिक द्वर्दशा का कारण हो गया है। 5 स्वयंवर का महत्व यद्यपि इतिहासों में वर्णित है तो भी स्त्री की इच्छा की ओर ध्यान दिये बिना ही विवाह मनाया जाता था। परिणाम स्वरूप अनमेल विवाह,

विधवाओं के विवाहधिकार का निषेध, निस्सहाय होकर वेश्यावृत्ति को ग्रहण करने की प्रथा, स्ती–प्रथा, पर्दा–प्रथा आदि तत्त्कालीनभक्ति की दुर्दशा के सबूतें हैं। 6 राजपरिवार की महिलाओं को घूँघट में रहने पड़ते थे। सभाओं और दरबारों में उनका प्रवेश मना भी किया जाता था। 7 राजा–महाराजाओं के कन्याहरण की कथाएं 'रासो' साहित्य में सुलभ है। पुरूषों के मर्यादाहीन यौन सम्बंध का विरोध भी तत्त्कालीन समाज में यंत्र–तंत्र प्रकट किया जाता था। मानव में प्रेम सम्बंध का अभाव था। पारिवारिक जीवन बिगड़ जाने के कारण पवित्र पारस्परिक प्रेम का अभाव था।

लोक लाज कुल – श्रृंखला तजि मीरां गिरिधर भजी।
सदृश गोपिमा प्रेम प्रगटि कलिजुगही दिखायी।
निरंकुश अतिनिडर रसिक जस रंसना गायी।
दुष्टनी दोष बिचारि मृत्यु को उधम की नौ।
बार न बॉकौ भयो गरल अमृत ज्यों पीयौ।
भक्ति निमान बजाय कै काहुतैं. नाहिंन लजी।
लेकलाज–कुल–श्रृंखला तजि मीरां गिरिधर जी 8

राणाजी की दूसरी पीड़ाओं का पता भी पद से मिलता है। राणा द्वारा विष का प्याला भेजे जाने और पिटारी में सर्प भिजवाये जाने का उल्लेख है। प्रेम दीवानी मीरां ने अपनी प्रेम मुग्धता को नहीं छोडा। हम नहीं जानते कि इन पदों में कहां तक प्रक्षिप्त अंशों का समावेश हो गया है। परन्तु इतना तो समझ सकते हैं कि लोकमानस में मीरां का स्वरूप एवं परिचय किस प्रकार का था। मीरां के आत्मोल्लेख उनके अर्न्तजगत् का उद्घाटन करने वाले होने के कारण उनके व्यक्तित्त्व को समझने में सबसे अधिक सहायक हो जाते हैं। छल, कपट, धूर्तता आदि से प्रेरित होकर बाह्याडम्बरों के द्वारा दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति समाज में विद्यमान थी। बहुत से भक्त एवं धार्मिक नेता बाह्याडम्बर मात्र दिखाने वाले थे। गोरखपंक्ती सन्यासियों के आडम्बर मूलक रहस्यवाद सचमुच निंदनीय था। 9 मीरां पूर्व युग की साहित्यिक परिस्थितियां पूर्ण रूप से अभी तक प्रस्तुत नहीं हुई हैं। तत्त्कालीन समस्त ग्रन्थों की अप्राप्यता, विभिन्न रचनाओं के मिलजुल जाने की साध्यता साम्प्रदायिक रहस्यों एवं मन्त्रों के रूप में ग्रन्थों को अप्रचलित रखने की प्रवृत्ति आदि इसके मुख्य कारण है। उतना ही नहीं, इस युग की रचनाओं पर अभी तक पर्याप्त शोधकार्य भी नहीं हुआ है। उपलब्ध साहित्यिक धाराओं को लोकगीत, जैन और बौद्ध साहित्यिक परम्पराओं के अर्न्तगत मानकर संक्षिप्त अध्ययन करना युक्ति संगत प्रतीत होता है।

मध्यकालीन सामन्तों की कला प्रियता ने साहित्यकारों और कलाकारों को नवीन उत्साह और प्रेरणा प्रदान की। हिन्दु राजाओं के दरबारों में साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यों को प्रोत्साहन मिलता रहा। उनके आश्रय में रचित साहित्य में रूढिबद्धता, विलास प्रियता और शास्त्रीयता अधिक है।

सामन्ती युग में स्त्री, पुरूष के विलास का साधन मात्र रह गयी थी। राजा और सामंत अनेक विवाह किया करते थे और उनके अन्तः पुर में सैंकड़ों सुन्दरियां परिचारिकाओं के रूप में रहती थी। सामाजिक अत्याचारों के आधार पर तत्त्कालीन कवियों और कथाकारों ने अनेक कथा, प्रबन्ध नाटक आदि लिखे हैं, जिसमें त्त्सम्बन्धी कथाभिप्रायों का प्रयोग हुआ है। हिन्दी के पृथ्वीराज रासों जैसे काव्य तथा तत्त्कालीन दरबारी कवियों को अन्य रचनाएं इन प्रवृतियों को स्पष्ट कर देती है। नायिका–भेद के प्रकरण में स्वकीया के साथ परकीया के साथ परकीया और गणिका नायिकाओं को भी स्थान मिला है, जो तत्त्कालीन सामन्सी यौन मान्यताओं का परिचायक हे। प्रस्तुत युग में अध्यात्म की जो पराधीनता एवं उपेक्षा थी उनका परिचय इसमें हमें मिलता है।

सामन्ती साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है। वह जनता के निकट से कोई सम्बन्ध नहीं रखता था। कवि महान काव्योद्देश्यों से नहीं प्रेरित रहते थे। उनका लक्ष्य आश्रयदाताओं के यशोगान से पुरस्कार पाना मात्र था। उतना ही नहीं उनके जात्याभिमान, धर्माभिमान एवं वैभव चित्रण भी इन रचनाओं में हुआ है। सामन्ती साहित्य कभी भी तत्त्कालीन सामाजिक जीवन का दर्पण नहीं कहा जा सकता। आध्यात्मिक नैतिक एवं सामाजिक उत्कर्ष की बातों की ओर साहित्यकारों ने देखा भी नहीं।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा प्रकाशित "मीराबाई की पदावली" में दी हुई पद संख्याएं इधर स्वीकृत हुई हैं । मीरा के प्रार्थना एवं विनय के पद कृष्ण के प्रति उनके गहरे प्रेम के परिचायक है । 10 श्री कृष्ण की अमर साधिका है मीरा उन्हीं को अपने जीवन का आधार मानती हैं और ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि तुम मेरे प्राणों का सहारा हो, तुम्हारे बिना मेरा इन तीनों लोकों में कोई आश्रय नहीं । 11

हरि म्हारा जीवन प्राण आधार।
और आसिरों णा म्हारा थे विण, तीनूं लोक मंझार ।
थे विण म्हाणे जग णा सुहावां, निरख्या सब संसार।
मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यों णेक णिहार।

इधर संसार से मुक्ति एवं दुःख दर्दों से निवृत्ति कानिवेदन अपने पद के द्वारा किया गया है। कृष्ण को अनेक कथाओं का स्मरण दिलवाते हुए प्रार्थना करती है कि मेरा भी उद्धार करो । 12 भगवान की शरण में रहने और उनको कृपा से जीवन को शांतिप्रद बना देने की प्रवृत्ति इधर प्रकट होती है।

मण थे परस हरि रे चरण
मुगध सीतज कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण।
इण चरण प्रह्लाद परस्यां, इन्द्र पदवी धरण।
इण चरण ध्रुव अटल करस्यी, सरण असरण सरण।
इण चरण ब्रह्मांड मेटयां, नरवासियां सिरी भरण।
इण चरण कलिया नाथ्यां गोपलीला करण।

इण चरण गोबरधन धारयां, गरब मधवा हरण।
दासी मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण।।

आत्मकथात्मक पद बहुत कम हैं। इनके कुछ पदों के वर्णय जीवन में हुई पीड़ाओं से सम्बन्धित एवं उनसे अदभुत मुक्ति पाने के हैं। यह दिखाया गया है कि भगवान् की कृपा से वे अपने को बचाया करती थी। परन्तु यह उल्लेखनीय है कि जीवन की प्रत्येक घटना पर प्रकाश डालना उनका लक्ष्य नहीं था। इन पदों में भगवान की अद्भूत कृपा का वर्णन करके उनकी महिमा का प्रमाण दिया गया है। राणा तथा सास से हुई पीड़ाओं का अनुस्मरण सर्वाधिक प्रतिकूल परिस्थितियों से बच जाने का है ।

राणाजी थे क्यांने, राखो म्हासूं बैर
थे तो राणा जी म्हांने इसडा लागों ज्यों बच्छन में कैर ।
महल अटारी हम सब त्यागों थारो बसनो सहर
कागज़ टीकी राणा हम सब त्यागा भगवीं चादर पहर। 13

मीरा मानती है कि ईश्वर ने अपनी कृपा से विष को अमृत में परिवर्तित किया है। यह उल्लेखनीय है कि जान से मारने का उधमकरनेवाले राणा या सास के प्रति उनके मन में द्वेष भावना नहीं है। 14 उलटे उनका मन सदा प्रेम एवं क्षमा की भावनाओं से भरा पूरा रहता था। भगवान की कृपा से बच जाने का संतोष भी प्रकट किया गया है।

प्रकृति को उद्दीपन के रूप में स्वीकार करने की तत्त्कालीन काव्य प्रवृत्ति का परिचय भी मीरा के पदों से मिलती है। परम्परानुमोदित बारहमासा वर्णन करके कृष्ण के विरह की तीव्रता दिखाई गई हैं। 15 घनघोर बादल छाये और दो–चार घड़ी बरत कर समाप्त हो गए । वर्ण ऋतु के आगमन की प्रसन्नता में मेंढक, मोर, पपीहा और कोयल मधुर ध्वनि में बोलने लगे ।

मतवारो बादर आए रे, हरि को सने सो कबहूं न लाये रे।
दादर मोर पपइया बोलै, कोयल सबद सुणाये रे।
कारी अंधिकारी बिजली चमकै, विरहणी अति डरपाये रे।
गाजै बाजै पवन मधुनिया, मेहा अति झड लाए रे।
कारी नाग बिरह अति जारो, मीरा मन हरि भाये रे।

श्रावण में प्रियतम कृष्ण के भाग्यागमन की प्रतीक्षा है। मीरा के अनुसार प्रकृति संयोग को मधुरतम बना देती है।

जन जीवन में सांस्कृतिक महत्व रखने वाले होली तथा गौरीव्रत के उत्सवों का भी वर्णन मीरा के पदों में हुआ है । 16 उनके कई पदों में यह दिखायागया है कि प्रियतम कृष्ण के बिना उत्सव सब के सब फीके पड़े है। जीवन के संस्कारों को सुेखपद बनाने वाला अवश्य भगवान् का सम्पर्क है ।

मीरा ने कुछ उपदेशात्मक पद भी प्रस्तुत की है। सांसारिकता में मुग्ध हो जाना मूढ़ता है । गिरधर नागर के चरण कमलों में आश्रित रहकर संसार की मूढ़ता को छुड़ाने का उपदेश सचमुच रोचक है। उतना ही नहीं भक्तों से प्रेम और भौतिक वस्तुओं के मोह को त्याग करने का उपदेश भी दिया गया है। 17 परोक्ष रूप से यह स्थापित किया है कि आत्मसमर्पण एवं भगवत् कृपा शांति पाने के उपाय हैं।

नाम माहात्म्य भक्त कवियों का प्रिय विषय है। मीरा ने कृष्ण और राम के नाम स्मरण का आह्वान दिया है । नाम स्मरण से अनेक पाप हट जाते हैं। कालीय नाग को पराजित करके और विष को अमृत में बदलकर कृष्ण नेअपने नाम का महत्व प्रमाणित किया है।यहि विधि – भक्ति कैसे होय।

मण को मैल हियतें न छूटो, दियो तिलक सिर धोय।
काम कूकर लोभ डोरी, बाधि मोहि चण्डाल।
क्रोध कमाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल।
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देन।
दीन हीन हूै सुधारत से, राम नाम ण लेत।
आपहिं आप पुजाय के रे, फूले अंग ण समात।
अभिमान टीला किये बहु कहु , जल कहां ठहरात।
जो तेरे हिय अन्तर की जाणै, तासों कपटण वणे।
हिरदे हरि को नाम ण आवै, मुख तें मनिया गणै।
हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग।
दास मीरा लाल गिरधर सहज कर वैराग।18

राम नाम की महिमा भी मीरा खूब जानती थी। नाम वास्तव में आराध्य सम्बन्धी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाला सुत्र वाक्य है। उसका प्रताप भक्तों की दृष्टि में अनन्य है। नाम को रूप से भी अधिक महत्व देने की प्रथा का अंगीकार भी हुआ है ।

निष्कर्ष

कृष्ण का रूप सौन्दर्य मीरा का सर्वाधिक प्रिय विषय था । आपके पदों में आराध्य के अनन्य सौन्दर्य को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास है। कृष्ण के सौन्दर्य को बढ़ानेवाले विभिन्न पहलुओं का भी वर्णन हुआ है । वेशभूषा, सौन्दर्य के प्रियत्त्वों की ओर संकेत किया है। 19 कृष्ण को हृदय के टुकड़ेके समान प्रिय मानने की प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है। इस रूप सौन्दर्य वर्णन के प्राण तल्लीनता से उत्पन्न भावातिशय है ।

चीरहरण प्रसंग भागवत् में मिलता है। 20 पूर्ण समर्पण की भावना लज्जादि बाधाओं को छुड़ाने वाली है। यह पार्थक्य का नामो निशान भी नहीं है। भाव–विभोर होकर कृष्ण के व्यक्तित्व में तल्लीन हो जाने का यह आह्वान वासना जगत् में बेजोड़ है। मीरा ने चीर हरण लीला का वर्णन किया है।[1]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ. राजनागपाल, मीरांबाई की पदावली, तृ. सं– 1988, पृ : 3.

2 आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, मीरांबाई की पदावली, सं – 1967, पृ : 18.

3 मीरा की. पदावली, पद–41.

4 मीरा की. पदावली, पद :5.

5 डॉ. एम.जार्ज, तुलसी तथा एषुत्तछन, अप्रकाशित थीसीस, पृ : 86

6 डॉ. ब्रजविलास श्रीवास्तव, मध्यकालीन हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में कथानक रूढ़ियां, सं–1968, पृ0 : 95–96.

7 डॉ. शिवकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां, बारहवां सं – 1990, पृः 118.

8 नाभादास, श्री भक्तमाल, सं– 188 ई. पृ : 712–713.

9राजनाथ शर्मा, साहित्यिक निबन्ध, नवम सं – 1967, पृ : 763.

10 डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर, मीराबाई, सं – 1990, पृ : 44–45.

11 मीरा की पदावली, पद – 4

12 मी० की पदावली, पद – 1.

13 मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हमरित कर दियो जहर मी० की पदावली, पद – 34

14 डॉ० माधुरी नाथ, मीरा काव्य का गीतिकाव्यात्मक विवेचना, सं–1990, पृ–93.

15 मी० की पदावली, पद – 80.

---

[1]झटक्यों मेरो चीर मुरारी

गागर रंग सिरते झटकी, बेसद मुर गई सारी।

छुटी अकल कुंडल तें उरझी, झड़ गयी को किनारी।

मन मोहन रक्षिक नागर भये, हो अनोखे खिलारी।

मीरा के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल सिरधारी।

मी० की पदावली, पद – 169

16 रे सांवलिया म्हारे आज रंगोली गणगौर छेजी।
कालो पीलो बादलों में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छेजी।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रहीं सारे छैजी
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणों में म्होंरा जो छैजी
मी० पदावली, पद – 144.

17 मी० की० पदावली, पद – 157.

18 कमल दल लोचणों ले नाथ्या काल भुंजग।
कालिन्दि दह नाग नाथ्या, काल फण–फण निर्तकनत करंत।
कूदां जल अन्तर णां इस्यां थें एक बाहु अणन्त।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर ब्रजवणितां रो कंत।
मी० की पदावली, पद – 167.

19 ग्हाणं चाकर राखां जी, गिरधारी लाल चाकर राखांजी।
चाकर रहस्यूं बाग लगास्यूं नितउठ दरसण पास्यूं।
बिन्द्रावन री कुंज गलिन मां गोविन्द लीला गास्यूं।
चाकरी में, दरपण पास्यूं, सुमिरण पास्यूं खरची।
भाव भगत जागीरां, पास्यूं जणम–जणम री तरसी।
मोर मुकुट पीताम्बर साहां, गल बैजन्ती मालो।
बिद्रावन में घेण चरावां, मोहन मुरली वालो।
हरे हरे णवां कुंज लगास्यूं , बीचां बीचां बारी।
सांवरिया रो दरसण पास्यूं , पहण कुसुम्बी सारी।
आधी रात प्रभु दरसण दीस्यो जमणा जी रे तीरा।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर , हिवरो घड़ो अधीरा।
मी० की पदावली , पद – 153.

20 भागवत् पुराणम् , 3 , 29–11–14.

[1]झटक्यों मेरो चीर मुरारी
गागर रंग सिरते झटकी, बेसद मुर गई सारी।
छुटी अकल कुंडल तें उरझी, झड़ गयी को किनारी।
मन मोहन रक्षिक नागर भये, हो अनोखे खिलारी।
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल सिरधारी।
मी० की पदावली, पद – 169